शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh Online Available at https:// www.shodhutkarsh.com ISSN-2993-4648
वर्ष - 04 अंक– 13 जनवरी - मार्च - 2026 Impact factor– 4.5

प्रेमचंद के उपन्यासों में गृहणी नायिकाओं का जीवन

डॉ. लक्ष्मीकांत चंदेला
शोध निर्देशक एवं सह आचार्य -हिन्दी
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा मध्य प्रदेश

रबिता देवी प्रजापत
शोध छात्रा, हिन्दी-विभाग
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा मध्य प्रदेश

सारांश- प्रेमचंद हिन्दी साहित्य के यथार्थवादी उपन्यासकार हैं, जिन्होंने अपनी रचनाओं में भारतीय समाज की सामाजिक, आर्थिक और पारिवारिक विसंगतियों को बड़े सशक्त ढंग से चित्रित किया है। प्रस्तुत शोध-पत्र में प्रेमचंद के प्रमुख उपन्यासों — **गोदान, गबन, सेवासदन, निर्मला** और **प्रतिज्ञा** — में चित्रित गृहणी नायिकाओं के जीवन, संघर्ष तथा व्यक्तित्व का अध्ययन किया गया है।

प्रेमचंद की गृहणी नायिकाएँ (धनिया, जालपा, सुमन, निर्मला, पूर्णा आदि) केवल घरेलू सीमाओं में बंधी हुई नहीं हैं, बल्कि वे पितृसत्तात्मक समाज, दहेज प्रथा, बाल विवाह, अनमेल विवाह, वैधव्य, आर्थिक शोषण, सामाजिक उत्पीड़न तथा लैंगिक असमानता जैसी चुनौतियों के विरुद्ध संघर्ष करती हुई दिखाई देती हैं। ये नायिकाएँ सशक्त, जुझारू और यथार्थवादी हैं, जो गरीबी, सामाजिक रूढ़ियों और पुरुष-प्रधान मानसिकता के बावजूद पारिवारिक मर्यादा, आत्म-सम्मान तथा सामाजिक न्याय की रक्षा के लिए प्रयासरत रहती हैं।

शोध का मुख्य उद्देश्य यह है कि प्रेमचंद ने इन नायिकाओं के माध्यम से न केवल स्त्री-जीवन की पीड़ाओं को उजागर किया है, बल्कि समाज सुधार और नारी सशक्तिकरण की आवश्यकता पर भी बल दिया है। यह अध्ययन प्रेमचंद की नारी-दृष्टि को समकालीन संदर्भ में प्रासंगिक सिद्ध करता है।

बीज शब्द -प्रेमचंद,गृहणी नायिकाएँ,नारी संघर्ष,पितृसत्तात्मक समाज,यथार्थवाद,सामाजिक शोषण,स्त्री सशक्तिकरण,गोदान,सेवासदन,गबन।

प्रस्तावना- प्रेमचंद हिन्दी साहित्य के ऐसे श्रेष्ठ एवं महत्वपूर्ण उपन्यास कार हैं, जिनके साहित्य में दमन, उत्पीड़न, वैमानस्य और शोषण आदि सामाजिक बुराईयों की अवस्था तथा परिस्थियों का यथार्थ चित्रण और प्रतिबिम्ब देखने को मिलता है। 'प्रेमचंद और उनका साहित्य हमारी संस्कृति की धरोहर है, प्रेमचंद ने अपनी लेखनी में बड़ी ही सूक्ष्म दृष्टि नारी की ब्यथा पर केन्द्रित की है। इस लेखन में प्रेमचंद द्वरा लिखित उपन्यासों में नायिकाओं के जीवन अध्ययन किया जाएगा। यह एक अनुसंधान मूलक विषय है, नायिका चिंतन का वह स्वर है जो रूढ़ि होती मान्यताओं के खिलाफ आवाज उठाता है। यहां रूढ़िवादी मान्याताओं से जकड़ी स्त्रियों के स्वरों को साकार बनाने का प्रयास किया जाएगा जो हमारे पुरुष प्रधान समाज में वर्षों से पुरुष की हुकूमत रही है जिसकी वजह से पितृसत्तात्मक समाज का मानदण्ड दोहरा रहा है उनके मूल्यों और अपधारणाओं में भी विरोधाभाष है। इसमें उनके अंतःविरोधियों के सामने लाने का प्रयास किया जायेगा। इस विषय पर विश्वचिन्तन की एक ऐसा भाव है, जो स्वार्थ आपेक्षित स्त्रियों को लम्बे समय तक अनेक अधिकारों से बंचित रखा गया है। ऐसे में यह पितृसत्तात्मक परिवार पर सबाल खड़े करता है आखिर क्यों? स्त्रियों को संस्कारों के नाम पर जकड़ा गया है। आखिर क्यों वे अपने खिलाफ हो रहे अन्यायों के विरोध में आवाज नही उठा पाई। क्योंकि उसे एक ऐसे साचें में ढाल दिया गया है जहाँ वे सजीव होकर भी निर्जीव की ओर मूकदर्शी बनी रही, ऐसी समस्याओं को उभारने का प्रयास किया जायेगा।

शोध सारांश - हिंदी सहित्य के लेखक प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में अनेक प्रकार के गृहणी नायिकाओं का चित्रण किया है, जो उनके समय के दौर में सामना किये गये सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक चुनौतियों को देशति है। उनके कार्यकाल में कुछ उल्लेखनीय महिला पात्रों में गोदान की घनिया शामिल है. जो गरीबी से संघर्ष करती है, और "निर्मला" उपन्यास की निर्मला, जो बाल विवाह एवं अपने से अधिक उम्र के पति को पाकर जो कठिनाइओं तथा समाज की कठोर समस्याओं का सामना करती है ये नायिका अक्सर प्रेमचंद के लिये लैंगिक असमानता, उत्पीड़न और भेदभाव जैसे सामाजिक मुद्दो का पता लगाने और उनकी अलोचना करने के लिये शक्तिशाली रूप से कार्य करती है। प्रेमचंद के उपन्यासों में नायिकाएँ हमेशा से सजग एवं जगरूक रही हैं। कामकाजी नायिकाओं कां हमेशा से प्रमचंद ने अपने उपन्यासों में आगे रखा है। प्रेमचंद के उपन्यासों में कई महिला पात्र मिलेंगी। उदाहरण के लिए. "सेवासदन" में गंगाजली का चरित्र जटिल और स्वाभिमानी है, जो सामाजिक अपेक्षाओं और व्यक्तिगत इच्छाओं को दर्शाता है। "कर्मभूमि में सुखदा जैसी मजबूत और सहनशील नायिकाएँ चित्रित है, जो सामाजिक मानदंडों के विषयों को संबोधित करती हैं। प्रेमचंद ने हमेशा से महिलाओं को लालची और स्वाचलित मानदंडों को चुनौती देने में संक्षम बनाया है। गृहणी होने के बाबजूद भी उन्हें प्रेमचंद जी ने शसक्त होने का चित्रण किया है। "गबन" उपन्यास में जलपा जैसी पात्र के माध्यम से, उन्होंने 20वी सदी के शुरूआती भारत में महिलाओं के संघर्ष और आकाक्षाओं का पता लगाया, और अपने साहित्य में महिला पात्रों के अनुभवों को सूक्ष्म चित्रण किया है, और उनका योगदान भी दिया है। प्रेमचंद के गृहणी पात्रों की चरित्र कि विशेषताओं को अनेक रूपों में समझा जा सकता है।

प्रेमचंद के उपन्यास में कृषक गृहणी नायिकाओं का जीवन संघर्षपूर्ण यथार्थवादी और सशक्त रूप में चित्रित हुआ है। वे केवल घर की चारदीवारी सीनि नहीं है, बल्कि परिवार के आर्थिक और सामाजिक संघों में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलती हैं।

सशक्त और जुझारु व्यक्तित्व प्रेमचंद की कृषक गृहणी नायिकाएँ, जैसे 'गोदान की धनियाँ, कमजोर या दब्बू नहीं हैं। वे विषम परिस्थितियों में भी अपने परिवार के साथ खड़ी रहती है, अन्याय का विरोध करती हैं, और जरूरत पड़ने पर सामाजिक रुढ़ियों को तोड़कर मुखर हो जाती हैं।

आर्थिक संपये में भागीदारी ये नायिकाएँ केवल गृहणी नहीं है, बल्कि कृषि कार्यों और आर्थिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेती हैं। ये जानती है कि किसान जीवन में हर हाथ का काम करना कितना जरूरी है। धनियाँ होरी के साथ हर सुख-दुख में, यहाँ तक कि कंकड़ खोदने और सूत कातने शारीरिक श्रम में भी हिस्सा लेती है। सामाजिक और धार्मिक शोषण का विरोध वे समाज और धर्म के ठेकेदारों द्वारा किसानों पर किए जाने वाले शोषण को चुपचाप सहन नहीं करती। गोदान में जब चातादीन जैसे पुरोहित भरते हुए होरी से गोदान की अपेक्षा करते हैं, तो धनियाँ इस पाखंड पर करारा तमाचा मारती है और अंत में दान-दक्षिणा से मना कर देती है। देने पारिवारिक मर्यादा और सम्मान की रक्षारू गरीबी और शोषण के बावजूद, ये पात्र पारिवारिक मर्यादा और आत्म-सम्मान बनाए रखने के लिए प्रेयासरखती है। हारी और चनियों मोटा-झोटा खाकर सरजाद के साथ, जीना चाहते हैं।

यथार्थवादी चित्रण, प्रेमचंद ने इन पात्रों का चित्रण पूरी तरह से यथार्थवादी ढंग से किया है। वे आदर्शवादी होने के साथ-साथ मानवीय कमजोरियों और भावनाओं से भी भरी हुई हैं। उनका जीवन तत्कालीन

भारतीय ग्रामीण समाज की सच्ची तस्वीर प्रस्तुत करता है, जहाँ उन्हें सामाजिक अवरोधों, दहेज प्रथा, और अनमेल विवाह जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। शिक्षा और जागरूकता की चाहरू प्रेमचंद इन महिलाओं की शिक्षा के भी पक्षधर थे और उनके पात्रों में जागरूकता लाने का प्रयास करते हैं, ताकि वे अपने अधिकारों के लिए स्वयं लड़ सकें।

संक्षेप में, प्रेमचंद ने अपनी कृषक गृहणी नायिकाओं के माध्यम से भारतीय ग्रामीण महिला के जीवन के संघर्षों, बलिदानों और उनके भीतर छिपी अदम्य शक्ति को उजागर किया है, जो उन्हें पुरुष पात्रों के समान ही महत्वपूर्ण और जीवंत बनाती है

गृह संघर्ष:- प्रेमचंद की महिला पात्र ने हमेशा से गरीबी और भुखमरी जैसे सामाजिक सघर्षों में जूझती रही है लेकिन इन सामाजिक संघर्षों का सामना वे बड़े ही निडरता से करती है। गरीबी के कारण वैश्यावृति जैसे कार्यों में भागीदारी लेना, तथा अशिक्षित रहते हुए भी अपने बच्चों को शिक्षित करना एवं छोटी उम्र में भी माता-पिता के भलाई के लिए अमीर घराने में विवाह करना लेकिन बाद में इसके दुष्परिणामों समझ कर इनका निवारण खोजना, प्रेमचंद के उपन्यासों की नाइका परखूबी जानती है। प्रेमचंद ने उन सभी सामाजिक मुद्दों को अपने उपन्यासों में स्थान दिया है जो वास्विक जगत के पर्याय थे। और इन्हीं समाजिक समस्याओं के कारण के निवारण के लिए स्वतंत्र नारी पात्रों की रचना की है।

गृहकार्य उत्पीड़न के विरूध्द संघर्ष गृहणी नायिकाओं को अक्सर उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है। प्रेमबंद के उपन्यास उस उग के दौरान सामाजिक संधयों के प्रतिबिंग के रूप में कार्य करती है मुन्सी प्रेमचंद ने अपने रचनाओं में सामाजिक उत्पीड़न के खिलाफ नायिकाओं के संघर्ष को चित्रित किया है। निर्मला, सुमन एवं जोहरा जैसे पात्रों को लैगिक मानदण्डो गरीबी और सामाजिक अपेक्षाओं में निहित चुनौतियों को सामना करना पड़ता है प्रेमचंद ने पराम्परिक समाज में औरतों के सामने आने वाले व्यापक समस्याओं पर प्रकाश डालते हुए उनके सरलता और संकल्प को कुशलता से चित्रित किया है। प्रेमचंद की नायिका अक्सर प्रतिबंधात्मक रीति रिवाजों से और सीमित शिक्षा के अवसरों तथा असमान शक्ति गतिशीलता से जूझती है। प्रेमचंद ने अपने महिला पात्रों के माध्यम से समाज सुधार और सशक्तिकरण की आवश्यकता पर बल देते हुए, उनके जीवन कठिनाइओं पर प्रकाश डालते है गबन में जालपा की दुर्दशा का वर्णन करते हैं. जो अपने पति के विपत्ति और कुकर्मा के बाद आर्थिक संघर्ष और सामाजिक निर्णय का सामना करती है। इसी प्रकार निर्मला में निर्मला का किरदार बालविवाह की कठोर वास्तिविकता और उसके बाद के चुनौतियों का सामना करता है। इन उपन्यासों की कथाओं के माध्यमले प्रेमवंद ने नायिकाओंके सामने आने बाली विभिन्न चुनौतियों को संबोधित करते है, बल्कि उन व्यापक सामाजिक संरचनाओं की अलोचना करते है जो उनके उत्पीडन को कायम रखती हैं।

गृहस्थ जीवन की कठिन पात्र गृहणी नायिकाओं में सबसे अधिक समस्याओं का रूप देखने को सेवासदन में सुमन और निर्मला जैसे पात्रों में देखने को निल ता है जो कठिन व्याक्तिगत सामाजिक गतिशीलता को निर्देशित करते है। प्रेमचंद ने इन नायिकाओं का सशक्त रूप प्रस्तुत करते है। वे स्त्रियों को केवल वासना की कठपुतली न मान कर सामाजिक मुद्दों से दो दो हाथ करने वाली स्वबलंबी महिला बताया है। सुमन वैश्यावृत्ति जैसे कार्यों से जुड़कर भी समाज में बदलाव लाने की बात करती है वहीं निर्मला ताँताराम के साथ विवाह उपरांत दुख का सामना करती है परंतु अपने सौतेले बेटे से उत्यान्त प्रेम करती हैंये नायिका पात्र काफी कठिन समस्याओं का सामना करके भी अपने आप को समाज में एक आदर्श के रूप में स्थापित करती है। गृहणी नायिकाओं में आधुनिक कला प्रेमचंद के उपन्यासों में समस्त नायिकाएं आधुनिकता का महत्व रखती है जो बलिदान सहनशक्ति और न्याय की तलाश जैसे व्यापक विषयों का प्रकतनिधिद्यत्य करती है प्रेमचंद अक्सर बड़े सामाजिक कारणो का प्रतिनिधित्व करते है जिसमे पतीकात्मक रूप से महिला पात्रों का उपयोंग करते थे उदाहरण के लिए "गोदान में धनिया गरीब ग्रमीणों के शोषण का प्रतीक है, जबकि निर्मला अपने सौतेले बेटे से निःस्वर्थ प्रेम और बलिदान का प्रतीक बन जाती है अधुनिकता के रूप में प्रेमचंद द्वारा ग्रामीण नायिकाओं का कुशल उपयोग उनकी उपन्यासों के भीतर सामाजिक विषयों और अलोचनाओं की गहन खोज की अनुमति देता है "गवन में जालपा भौतिकवाद और सामाजिक अपेक्षाओं के परिणामों का कलात्मक रूप उनके संघर्ष और विकल्प बदलते समाज में व्यक्तियों द्वारा सामना की जाने बाली उचित सुविधाओं का देख-रेख करते है। इसी तरह निर्मला में नाम मात्र का चरित्र दहेज और सामजिक अन्याय है गठन पर प्रकाश डालते हुए पितृसतात्कक व्यवस्था में महिलाओं द्वारा सामना किये जाने वाले शोषण का प्रतिनिधित्व बन जाता है। प्रेमचंद द्वारा नायिकाओं को आधुनिकता के रूप में उपयोग करना उनके उपन्यास की अर्थ और सामाजिक टिप्पणियों से समृध्द करता है।

गबन- सन् 1931 में प्रेमचंद के लिखे हुए "गबन" नामक उपन्यास का प्रकाशन हुआ था। मध्यवर्गीय परिवार की आर्थिक, समाजिक समस्याओं को लेकार प्रारंम्भ हुआ है। इस उपन्यास में भी प्रेमचंद ने अपने अन्य उपन्यासों की बात कुछ सामाजिक समस्याएं उठाई हैं। और साथ ही उसका निदान भी प्रस्तुत किया है 'गवन में समानता आभूषण प्रेम की समस्या बताई जाती है, पर वास्तव में इस समस्या के अंतर्गत मध्यवर्गी परिवार की मिथ्या प्रदर्शन भावना और कुंठा के कारण जीवन के सहज विकास की अवरोध पर स्थितियां और जटिलताओं का मार्मिक चित्रण हुआ है। प्रेमचंद के अन्य उपन्यासों में पृथक इस कृति में मानव वैज्ञानिकता रोचक तथ्य और नवीनता अपेक्षाकृत अधिक है लेखक ने इसमें कुछ सामाजिक कुरीतियों के फल स्वरुप जटिल हुई नाटक की घटनाओं और उनकी जटिलताओं का चित्रण किया है. मनुष्य की स्वभावगत दुर्बलताओं और भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में उनकी प्रतिक्रियाओं का चित्रण करते हुए लेखक ने यह दिखाया है कि किस प्रकार से एक व्यक्ति एक बार कानून भूल करने के पश्चात पुन परिस्थितियों के अनुसार ही कार्य करने को बाद हो जाता है। इसके अतिरिक्त "गबन" में प्रेमचंद ने मध्यवर्गी जीवन का विस्तार से चित्रण किया है। प्रेमचंद की इस समय तक की लिखे हुई सभी उपन्यासिक कृतियों में 'गवन अपेक्षाकृत अधिक व्यावहारिक और अर्थपरक है। मध्य वर्ग निम्न वर्ग और उच्च वर्गी समाज का जितना मनोवैज्ञानिक और चित्रण करने में प्रेमचंद को 'गबन' में सफलता मिली है उतनी अन्य कृतियों में नहीं विशेष रूप से मध्यवर्गीय वृत्ति और खोखलेपन का जैसा चित्रण गबन में मिलता है वैसा किसी अन्य उपन्यास में नहीं उनके माध्यम से लेखक ने आधुनिक नवयुवक है उच्च आकांक्षाएं और सामान्य साधन जैसी वेड़ियों से भरी हुई स्थित रामनाथ को संघर्ष करने के लिए छोड़ जाती है, और फिर उनकी प्रतिक्रियात्मक संभावनाएं सामने आती हैं यह प्रेमचंद की सूक्ष्म दृष्टिकोण का परिणाम है भारतीय समाज के विभिन्न पक्षों वर्गों का यथार्थवादी स्तर पर सर्वप्रथम प्रभावशाली चित्र उपस्थित करने की दृष्टि से प्रेमचंद के इस उपन्यास का विशिष्ट महत्व है।

गबन का प्रधान प्रतिपाद नगरियों में नारियों का आभूषण प्रेमी प्रदर्शन प्रिय स्वकेन्द्रित स्त्री का स्वार्थ त्याग एवं सेवा कर्तव्य निष्ट स्त्री बनने की कथा है। "जालपा" के व्यक्तित्व का प्रमुख तत्व है गहनों से प्रेम, पति से प्रेम, प्रेम मानवता से उसके भोले भाले हृदय में प्रेम का बीज पड़ा था एक दिन वह विशाल वृक्ष बनकर लहलहा उठा ज्यों-ज्यों यह पौधा बड़ा हुआ, वह अधिक हरा-भरा होता गया, उसकी जड़ों में

निः स्वर्थ भावना अनुप्रमाणित होने लगी वह सिंगार को प्रेम करती है। भोग विलाश से भी घृणा नही करती वह पुरुष का प्रेम भी चाहती है, किन्तु उसका यह प्रेम भावना देश प्रेम व मानव प्रेम के बीच कभी भी अवरोध बनकर खड़ी नही हो पाती। 1 जालपा का चरित्र कम आकर्षक नहीं है जालपा रमा की तरह कठिनाइयों से भागती नहीं अपितु साहस और धैर्य के साथ संघर्ष करती है जालपा एक देश भक्त नारी है जालपा भारत का उगता हुआ नारित्व है।"[2] इसी उपन्यास में 'रतन और देवी दीन को बुढ़िया, जग्गो दो स्त्रियों है जिन्हे गहनों से विशेष लगाव है। किन्तु रतन जहों धनी रवि की अपने पति की लाडली पत्नी है वही बुढ़िया उद्योगशील एवं कर्मठ है वह अपनी पति की कमाई पर गहनों का शौख नही पूरा करती इसलिए हमे इन दोनो की आभूषण प्रियता खलती नहीं किन्तु जालपा की खलती है, क्योंकि वह एक स्वछंदपूर्ण वातावरण में जीती है।

गबन में जोहरा के माध्यम से लेखक ने समस्या का वित्रण प्रस्तुत किया है परंतु यहां से इस समस्या को पुराने आदर्शवादी समाधान को नहीं दोहराया गया है। प्रेमचंद उस कट्टर वादिता की कठोरता से भली भाँती परिचित थे। इसी कारण प्रेमचंद ने गबन में अपनी ओर से नारी जीवन की विभिन्न समस्याओं के संबंध भली भाँति टिप्पणी किये बिना कंवल नारियों के मुख से ही उनकी अनार्वेदना को कहलवाया है। नारी जीवन में त्याग श्रध्या, सहजता, सरलता, प्रेम आदि की आवश्यकता पर चिंता व्यक्त की है नारी शिक्षा के संबंध वकील साहब का कहना है कि "जब तक स्त्रियों की शिक्षा का प्रसार न होगा हमारा कभी उदधार न होगा जब तक हम स्त्री पुरुष को अबाध रूप से अपना सामाजिके विकास न करने देंगे हम अवनति की ओर खिसकते जाएँगे।

रतन और जालपा वैश्या जीवन को जीने बाली जोहरा तक भी मिथ्या प्रदर्शन और विलाशिता के अन्या सामग्रियों को छोड़कर बदले परिधनों में शहर जीवन की और मुड़ जाती है। जालपा अपनी सारी प्रसाधन सामग्री एकत्रित कर गंगा में विसर्जित कर आत्म में गौरव और संतोष की अनुभूति करती है उसके द्वारा एसा कर लेखक शायद विलाशिता के जनजीवन से मुक्ति होने की कोशिष है।

सेवासदन यह उपन्यास एक दुखी गृहिणी की कहानी बताता है जो एक वेश्या बनती है और बाद में वेश्याओं की बेटियों के लिए एक अनाथालय चलाती है। सेवासदन प्रेमचंद ने सेवासदन में नारी की पराधीनता को मुख्य समस्या के रूप में लिया है, इसमे अन्य समस्याएं उत्पन्न हुई है। दहेज के अभाव में रूपवती सुमन का विवाह दोहाजू निर्धन क्लर्क से कर दिया जाता है। विवाह संदेह प्रवृत्ति का पति सुमन के प्रति संदेह और अपमानजनक व्यवहार करने बाला मिल जाता है। फिर सुमन को घर से निकालकर वेश्या जीवन अपनाना इस उपन्यास ने हिंदी कथा साहित्य के क्षेत्र में एक युगांतर स्थापित किया। इसमें लेखक ने मध्यवर्ती सामाजिक जीवन की कुछ ज्वलंत समस्याओं को उठाया है। हिंदी में सामाजिक उपन्यासों की ओर प्रवृत्ति प्रेमचंद युग में व्यापक रूप से विकासशील दिखाई देती है सेवासदन इस प्रवृत्ति का प्रवर्तक उपन्यास है। समाज में विविध वर्गों के नैतिक पतन के फलस्वरूप जो दुष्परिणाम सामने आते है उनकी ओर संकेत करते हुए लेखक ने उनके मूल कर्म पर भी प्रकाश डाला है। इस कृतित्व में जो सामाजिक समस्याएं अथवा विडम्बना ऑचित्रित की गई है उनका प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से संबंध समाज की सदीबादी दहेज प्रथा स्त्री शिक्षा की समस्या अनमेल विवाह की समस्या धार्मिक शोषण की समस्या तथा वेश्या प्रथा आज की समस्याएं हैं। प्रेमचंद की सहानुभूति प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से उन सभी पात्रों के साथ है जो उपयुक्त विद्यमान बना रहे हैं। वेश्या जीवन के प्रति सहन भूत दिखाते हुए प्रेमचंद ने इस उपन्यास में उनके सुधार के लिए सेवासदन की स्थापना की है। लेखक ने जो विचार इस कृति में उपस्थित किए हैं वह उनके प्रगतिशील दृष्टिकोण के परिचायक है प्रत्यक्ष रूप से यह उपन्यास में प्रचलित कुरीतियों पर तीखा व्यंग करता है। सेवासदन की मुख्य समस्या भारतीय नारी की पराधीनता है। प्रेमचंद ने किस तरह तमान रूढ़ियों तोड़ते हुए वर्तमान समाज में नारी को अपने निठुर विभत्स रूप में चित्रित किया है इस पर विश्वास नहीं होता। हमारे साहित्य में कितने उपन्यास नारी के आत्म बलिदान उसके सतित्व, उसकी पति सेवा पर लिखे गये है। सुमन का वेश्या बन जाना पाखंडी समाज के अन्तर्विरोधियों का उदघटन करता है। यह विचित्र समाज है इसमें वेश्या स्वतंत्र और विवाहित नारी पराधीन है। समाज द्वारा भोली का संम्मान क्यों होता है? लेकिन सुमन परिणाम पर पहुंचती है या नहीं। वह स्वधीन है और मेरे पैरों में बेड़ियां है।। वैश्या बन जाने की घटना पर पड़ी समाज की विकृति का लक्षण ही नहीं किन्तु नारी का विद्रोह थी।

सुमन सुन्दर थी. गला सुरीला था लेकिन उसकी इज्जत करना तो दूर उसके आत्म सम्मान को पग-पग पर ठुकराया जाता था। इसका कारण क्या था? मंत्रों के साथ सात भाँवरे घड़ चुकी थी फिर भी गृहस्थ नारी का संम्मान क्यों ना होता था? इसलिए कि यह विवाह प्रथा स्वक्षा से दो मनुष्यों का मिलन नहीं था स्वामी-पुरुष के लिए एक दासी प्राप्त करने का एक साधन मात्र थी। सत्य यह था कि पुरुष शासक था और स्त्री शासित। अपने दास का वह जितनी और जब चाहता इज्जत करता जब चाहता उसे ठुकरा देता। इस दास स्वामी के संबंध को ढकने के लिए उसे जितने आदर्शो के दुपट्टे ओड रखे थे. प्रेमचंद खींच कर फेंक दिया जिस समाज की स्त्री में वेश्याओं की स्वाधीनता हो और पुरुष उन्हीं को सम्मानित करे ऐसे समाज के भविष्य की कल्पना की जा सकती है। इस जरजर समाज व्यवस्था की विडंबना का प्रेमचंद ने अच्छी तरह प्रकट कर दिया है।[2] अधिकांश अनमेल विवाह और बाल विवाह दहेज के ही कारण होता है। नारी को निरीह, असहाय और निराश्रित समझ कर ही पति परिवार और समाज उस पर अत्याचार करता है जीविका निर्वाह का कोई साधन न होने के कारण ही वह दर-दर भटकती फिरती है और कुटिल जनो के हाथ का खिलौना बनती है। यह आर्थिक समस्या ही नारी मन की दुर्बलताओं को प्रोत्साहित करता है।"उ वास्तव में भारतीय नारी दरुण सामाजिक अवस्था उसकी पराधीनता का चित्रण ही सेवासदन के मूल सरोकार है।

प्रतिज्ञा- प्रेमचन्द कृत 'प्रतिज्ञा' नामक उपन्यास का रचनाकाल सन् 1906 है। 'प्रतिज्ञा' को 'प्रेमा' का नवीन रूप कहा जाता है। 'प्रतिज्ञा एक सामाजिक समस्या प्रधान उपन्यास है जिसमें प्रेमचन्द ने विधवा-विवाह की समस्या को उठाया है तथा उसके अलग-अलग पक्षों पर सतुलित दृष्टिकोण से विचार किया है। इस उपन्यास में प्रेमचन्द ने एक ओर पूर्णा नामक नारी पात्र के माध्यम से नारी के वैधव्य जीवन और विवष रूप पर प्रकाश डाला है 'पूर्णा ने एक लम्बी सांस खींचकर कहा- मेरे भाग्य से अपने भाग्य की तुलना न करो बहन पराश्रय से बड़ी विपत्ति दुर्भाग्य के कोष में नहीं है ।। उपर्युक्त कथन नारी के मन की करुण व्यथा प्रस्तुत करता है। 'पूर्णा को अपने घर से निकलते समय बड़ा दुःख होने लगा। जीवन के तीन वर्ष इसी घर में काटे थे। यहीं सौभाग्य के सुख देखे, यहीं वैधव्य के दुःख भी। अब उसे छोड़ते हुए हृदय फटा जा रहा था। जिस समय चारों कहार उसका असबाब उठाने के लिए घर आए, वह सहसा रो पड़ी। 2 अतः नारी जीवन किन-किन परिस्थितियों के मध्य से होकर गुजरता है उपर्युक्त कथन इस बात का साक्ष्य है। जहाँ दिन का उजाला भी है और रात का घोर अन्धकार भी किन्तु उजाले और अन्धकार में कोई अन्तर नहीं दिखाई देता है।

निष्कर्ष- दूसरी ओर लेखक ने सुमित्रा के माध्यम से नारी के विद्रोही रूप पर. प्रकाश डालने का प्रयास किया है जो सदैव पुरुषों के अन्यायों का विरोध करती है-'सुमित्रा मैं तो आप ही कहती हूँ, भाई! स्त्री पुरुष के पैरों की जूती के सिवा और है ही क्या। पुरुष चाहे जैसा हो चोर हो, ठगहो, व्यभिचारी हो. शराबी हो-स्त्री का धर्म है उसकी चरण रज धो-धो

कर पिए। मैंने कौन सा अपराध किया था जो उन्हें मनाने जाती।[3] प्रस्तुत कथन समाज में बुरे व कुलीन पुरुषों का विरोध करने वाली नारी की भावना को उजागर करता है। यह उपन्यास भारतेन्दु युग की सुधारवादी परम्परा के अन्तर्गत आता है जिसमें लेखक ने विधवा-विवाह का समर्थन किया है। प्रस्तुत उपन्यास में प्रेमचन्द ने आधुनिक सामाजिक व्यवस्था में स्त्री के अधिकार और सम्मान की बात भी की है। प्रेमचन्द ने इस उपन्यास में विधवा जीवन के व्यवहारिक रूप को यथार्थवादी आधारभूमि पर प्रस्तुत किया है। स्वभाव, शिक्षा, आधुनिकीकरण, संस्कार आदि के कारण बहुधा पति-पत्नी में वैमनस्य का जो कारण उत्पन्न होता है जो कि वैवाहिक कलह और विद्वेष को जन्म देता है, इन सभी सामाजिक समस्याओं पर प्रेमचन्द ने पूर्ण रूप से प्रकाश डाला है। एक स्थान पर पूर्णा का वक्तव्य देखते हैं पर्णा प्रेमा से कहती है "स्त्रियों का सुधार करने की आवश्यकता नहीं है। पहले पुरुष लोग अपनी दशा तो सुधार लें फिर स्त्रियों की दशा सुधारेगें। उनकी दशा सुधर जायेगी, तो स्त्रियाँ आप ही आप सुधर जायेंगी। सारी बुराईयों की जड़ पुरुष ही है। 4 अतः 'प्रतिज्ञा में प्रेमचन्द ने अनेकों सामाजिक समस्याओं को उठाया और अपने साहित्य के माध्यम से उन समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

****

संदर्भ सूची –

1.प्रेमचंद। सेवासदन। दिल्लीः साक्षी सदन, नवीन शाहदरा।
2. प्रेमचंद सेवासदन। दिल्ली मनोज पब्लिकेशन चांदनी चौक संस्करण 2005
3. प्रेमचंद। गबन। दिल्लीः साक्षी सदन, नवीन शाहदरा।
4. प्रेमचंद। गबन। इलाहाबादः संस प्रकाशन। 1962
5. शर्मा विलास। प्रेमचंद और उनका युग। नई दिल्लीः वाणी प्रकाशन। 1983
6. प्रेमचंद। गबन। नई दिल्लीः वान्यु एजुकेशन ऑफ भारत, 2/25 आँसारी रोड दारागंज। संस्करण 2025।
7. प्रेमचंद। प्रतिज्ञा। नई दिल्लीः वान्यु एजुकेशन ऑफ भारत, 2/25 आँसारी रोड दारागंज। संस्करण 2025।